दर्शन में नई वास्तविकताएँ

दर्शन में नई वास्तविकताएँ

उद्देश्य (OBJECTIVE)

नेतृत्व में समय के साथ परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं — लेकिन परमेश्वर की दी गई **दर्शन (Vision)** उसके उद्देश्यों को दर्शाती है।
यह प्रशिक्षण यह स्पष्ट करता है कि जब नई चुनौतियाँ आती हैं, तो हमें **नई वास्तविकताओं** को पहचानते हुए, अपनी दृष्टि को **फिर से पुष्टि**, **समायोजित**, और **संचालित** करना होता है।

सारांश (OVERVIEW)

- दृष्टि समय से ऊपर होती है — यह परमेश्वर के उद्देश्य को दर्शाती है
- समय के साथ नई वास्तविकताएँ आती हैं:
    - लोग बदलते हैं
    - संसाधन बदलते हैं
    - संस्कृति बदलती है
- एक आगुआ को चाहिए कि वह:
    - वर्तमान परिस्थितियों को समझे
    - दर्शन को फिर से देखे और पुष्टि करे
    - लोगों को नई दिशा में नेतृत्व दे
- नई वास्तविकताओं में:
    - **परमेश्वर के वचन में स्थिरता** खोजें
    - **समूह की सहभागिता** से मार्गदर्शन लें
    - परिवर्तन को विरोध नहीं, **अवसर** मानें
    - **लचीलापन** रखें — दर्शनस्थिर हो सकती है, लेकिन कार्यनीति बदल सकती है

संदर्भित बाइबल वचन (VERSES REFERENCED)

- नहेमायाह 2:17-18
- प्रेरितों के काम 1:8
- नीतिवचन 29:18

अध्ययन के लिए प्रश्न (QUESTIONS FOR FURTHER STUDY)

1. आपकी सेवकाई में कौन-सी नई वास्तविकताएँ सामने आई हैं जिनका आपने हाल ही में सामना किया है?

2. क्या आपकी वर्तमान रणनीतियाँ आपकी मूल दर्शनके अनुरूप हैं? किन क्षेत्रों में आपको बदलाव की ज़रूरत है?

3. नई वास्तविकताओं के बीच परमेश्वर की ओर से स्पष्टता पाने के लिए आप क्या कदम उठा सकते हैं?

4. आप अपनी दल या समूह के साथ किस प्रकार दर्शन को **फिर से संवाद** कर सकते हैं?

अधिक अध्ययन के लिए वचन पद (SCRIPTURE FOR FURTHER STUDY)

- हबक्कूक 2:2-3
- नीतिवचन 16:3
- मत्ती 28:18-20